प्रकृति पर मानव का हस्तक्षेप

प्रकृति ईश्वर का वरदान है। प्रकृति को माँ का समान देखना हमारा कर्तव्य है। प्रकृति एक माँ का स्थान पर रहकर सबका गुण केलिए प्रयत्न किया है। उस प्रयत्न का फल हम दिनप्रति अनुभव करता है। धरती में हमसब पहला हमारा माँ-बाप का पुत्र के प्रति जनम हुआ था। लेकिन प्रकृति एक माँ का समान हम सबको एक दृष्टि से पालन किया। प्रकृति से हम बहुत अधिक बातों पढ़ता है। इस प्रकार वह हमारा जान संरक्षण किया है। यहाँ प्रकृति माँ, बाप, गुरु और ईश्वर है।

प्राचीन काल की प्रकृति: प्राचीन काल में प्रकृति को ईश्वर का रूप देखकर हम पूजा करता था। प्राचीन काल की मानव को प्रकृति का महत्व जानता था। वे पेड़-पौधों धरती पर सुरक्षित करने केलिए प्रयत्न किया है। वे खेतों में खेती करके जीवन बिताता था। शुद्ध भोजन प्रकृति में खाता

था। उसका स्वास्थ्य भी इस कारण से अच्छा था। उनका दृष्टि में प्रकृति ईश्वर का वरदान है। उस समय में प्रकृति बहुत सुंदर था। ईश्वर का स्वर्ग का समान प्रकृति शोभित किया गया है। छोटी बच्चों को भी प्रकृति का महत्व समझता था। अपना जीवन का घटना में रहता था।

आधुनिक काल की प्रकृति : आधुनिक काल में प्रकृति दयनीय अवस्था में रहता है। प्रकृति अब अंत का समीप में रहता है। इसका कारण दुष्ट मानव है। मानव सब अपना जीवन और सुख का बारे में चाहता है। लेकिन वे नहीं सोचता, सुख और दुःख जीवन की दो अवस्थाएँ हैं। इसकेलिए अन्य जनों और प्रकृति को द्रोह किया पाप है। मानव आज बड़ा-बड़ा घर और कारखानों बनना है। उस प्रकार हमारा विश्व को वे विकसित किया। लेकिन हमारा खेतों, पेड़ों, पहाड़ों आदि इसकेलिए अपना जीवन बलि किया। आज हमारा संस्कृति बदलता है। इसका कारण मानव का दुष्ट चिंता है।

बड़ा - बड़ा कारखानों हमारा धरती पर उसका गर्व प्रकट किया। लेकिन उन सब का आगे वहाँ रहता खेतों, पेड़ों का महत्व हम क्यों छिपाता है? पेड़ों को काटकर मानव घर बनाता है। इस प्रकार हमारा जीवन भी दुःख की अवस्था में जाता है। खेतों का ऊपर सब विकास हुआ।

इस प्रकार हमारा भोजन संस्कृति भी बुरा हुआ। पेड़ हमको जीवन देता है। लेकिन इस प्रकृति का जीवन नाश करने को हम प्रयत्न किया है।

पेड़ का गुण : पेड़ो जीवन का कुठार है। पेड़ से हमको साँस मिलता है। इससे दवाथा मिलती है और घर बनाने केलिए अवश्य लकड़ी मिलता है और गुण भर फल, सब्जी भी मिलता और वे लकड़ी, पता, डाल, फूल, फल सबसे औषध मिलता है। इस प्रकार पेड़ का गुण को अंत नहीं है। पेड़ हम सबको बहुत अधिक सामानों देता है हम इसको

सिर्फ कुछ पानी देना है और नहीं। यहाँ पेड़ की संरक्षण केलिए पानी भी प्रकृति वर्षका रूप में देता है।

पेड़ का समान खेतों, नदियों, प्रकृति पहाड़ों आदि भी हमारा संरक्षण केलिए रखता है। लेकिन हम यह नहीं समझाता है। खेती को एक निकृष्ट काम का प्रकार दिखाई मानव जाती भी रखता है।

साहित्य में प्रकृति : अनेक भाषाएँ में अनेक कवियों प्रकृति का मन और सुंदरता की वर्णन किया। ये सब उनका अनुभूति है। इस प्रकार कुछ प्रकृति स्नेही कवियों आपका कविता में प्रकृति की दुरवस्था की वर्णन किया। एक जीवन को वे सब महत्व देखता है। मलयालम की कवि श्री. ओ. एन वि. कुरुप्प ने अपना कविता में इस धरती का अवस्था वर्णन किया और वे मानव जाति को विमर्श देना है। इस प्रकार वैकम मुहम्मद बशीर नामक एक साहित्यकार प्रकृति को ईश्वर का रूप में

देखता है। वे कहता है कि "धरती सबको वासयोग्य है और सबको धरती पर रहने की अवकाश रहता है।" यह सच है। लेकिन हम सोचता है कि प्रकृति हमारा स्थान है। हमको इस प्रकृति क्या कुछ करने को सकता है। यह एक गलत चिंता है। प्रकृति सब जीवजालों और पेड़-पौधों के भी है।

हम दुष्ट प्रवृत्ति का फल हमसब का सिर पर पड़ता है। हम खेती नहीं करता है। इस कारण से हमको अन्य संस्थानों से फल, सब्जी खरीदने की अवस्था आती है। इस में बिष है। एन्डोसल्फान, आजिनोमोटो आदि नामक अनेक बिष वस्तुओं हम दिन प्रति खाता है। इस कारण इसे अस्पताल की संख्या बढ़ जाती है। रोगी बढ़ जाती है। इस विषमय भोजन का कारण में हम सबका स्वास्थ्य नष्ट हो जाता। रोगी होने के लिये अस्पताल की दिन संदर्शक बनता। इस प्रकार हमारा पैसा भी कमी हो जाती है।

~~एक~~ प्रकृति का नाश से ये सब होता है। लेकिन हमारा ~~प्रकृ~~ प्रकृति की संरक्षण अवश्य होता है।

मानव जाति का जन्म प्रकृति से हुआ वे उस समय में नदी में रहना पानी ~~पी~~ पीता है। आज इसको न सकता है, इसका कारण नदि में मछली को पकड़ने केलिए मानव विष रखता है और बुरा वस्तुएँ नदी पर उपेक्ष किया गया है। इन सब का कारण नदी का सुंदरता नष्ट किया और इसका शुद्धता भी नष्ट होता है।

आज ~~व~~ रोगों भी अशुद्ध प्रकृति से होता है। कुछ रोगों हमारा जीवन नष्ट करने की कारण भी बना।

"प्रकृति संरक्षण हमारा उत्तरदायित्व है" इसका कृत्य निर्वहण से हमारा जीवन सफल हो जाता है। हमारा धरती पर वेरा बाधा हुआ विविध पेड़-पौधों और ~~व~~ पशु-पक्षियाँ भी रहता है। इसमें एक है

60th Kerala School Kalolsavam, Nov 28 - Dec 1, 2019 _ Kasaragod

Item Code: 645 Participant Code: 01

नामत्त |

प्रकृति संरक्षण केलिए आज अनेक संचलनाएँ रहता है। स्कूल में भी आज विद्यार्थियों को इसका महत्व समझाने की अवस्था बनता है। हमारा सरकार भी इसकेलिए तैयार। वे बहुत सहाय इसकेलिए हमको देता है। अनेक घर में इसका ऊपर में भी सब्जी और फल का पैधों रहता है। स्कूल से बड़ा पेड़ों की पौधा बच्चों को देता है। ये सब अच्छा है। लेकिन प्रकृति यथार्थ अवस्था हम समझाने की आवश्यकता बहुत अधिक है।

इसकेलिए इस विश्व का युव जनों का प्रयत्न अवश्य है। केरल में अधिक जनों को खेती करने को तात्पर्य रहता है। लेकिन रबदलते संस्कृति उन सबको ~~इसकेलिए~~ मन नहीं देता है।

हमारा प्रकृति का संरक्षण हमारा उत्तरदायित्व है। इस कारण से हम सब

(Note: Graded articles may be published in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

को धैर्य देना अवश्य है। इस प्रकृति का संरक्षण केलिए जून - 5 हम सब पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इस दिन में स्कूल में पौधों देता है। और विविध पौधों का अवश्य सबको समझाने की अवसर देता है।

हमारा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी एक प्रकृति स्नेही है। वे प्रकृति स्वच्छ करने को सभी प्रयत्न किया था। इस कारण से अक्तूबर - 2, को हम उसका जन्मदिन मनाया जाता है। इस दिन में सभी प्रकृति साफ करने केलिए एक हफ्ता उपयोग किया। विद्यार्थियों से आपका स्कूल और इस पर्यावरण साफ किया गया है।

सभी प्रकृति का महत्व जानता और इसका संरक्षण करने की अवश्यकता रहती है। गाँधीजी ने बोला :

"हमारा चिंताएँ प्रकृति बना है,
प्रकृति हमारा धैर्य बन गया,
धैर्य हमारा विजय बनता है"

इसमें हमको जानता है कि प्रकृति का संरक्षण केलिए हमको तल चाह रहते तो यह हमारा प्रवृत्ति का रूप में प्रकट किया। इस प्रवृत्ति से सबको धैर्य मिलता है। सबका धैर्य एक शब्द का धैर्य होता है और यह हमारा विश्व और धरती का विजय होता है। इस प्रकार हमारा प्रकृति हरा-भरी बनता है।

इसके बाद हमको अन्य देश में आता बि विभिन्न सब्जी और फल खाने की अवश्य नहीं आता है। प्रकृति के बारे में एक बात भी मानव जाने की आवश्यकता रहती है। इतना काल मानव का क्रूरता प्रकृति सहन किया। लेकिन आज प्रकृति मानव का प्रवृत्ति का आगे अपना दुःख और क्रोध प्रकट किया। यह बाढ़, भूकं भूचलन, सुनामी, सोयिल इरोशन आदि के रूप में प्रकट करता है। इसका उदाहरण है हमारा छोटा केरल में 2018, 2017 में

आया बाढ़ और ओखी नामक तूफान भी है। उत्तराखंड में आया बाढ भी इसका उदाहरण है। लेकिन एकता की दोस्ती से केरल की मानव ~~में~~ को उस महाकठिनाइयों पार करने को सकता और एक अच्छा प्रकृति को बनाने को सकता है।

2019 नवंबर 1 में केरल इसका नया जन्म मनाता है। एकता की एक अच्छा उदारण है यह। इस प्रकार हमको नया भारत बनने को सकता है। "Unity is strength" एकता नामक बल से हमको ~~न~~ नया ~~न~~ केरल, नया भारत, और क्या विश्व भी बनने को सकता है। प्रकृति के इस उन्नति केलिए मीडिया की सहाय हमको अवश्य है। आज बहुत अधिक मानव इन्टरनेट ~~का~~ उपयोग किया। इसप्रकार समाचार पत्र, टीवी, ~~का~~ मोबैल फॉन आदि से हमको मानव को प्रकृति का महत्व का बारे में बोध देने को सकता है। इस~~के~~ प्रवृत्ति केलिए हम सब

एकता से काम करना आवश्य है। इस प्रकार हमको हमारा अच्छा संस्कृति का उपयोग अच्छी तरह करने को सकता है। हमारा खेतों पेडों, नदियाँ आदि की ~~की~~ ~~अच्छ~~ संरक्षण अच्छी तरह करने को सकता है। लेकिन एक बात हमारा मन में सभी समय रखना आवश्य है। यह है, "प्रकृति सिर्फ हमारा नहीं, यह सभी मानव, पशु - ~~पक्ष~~ पक्षी, पेड - पौधों, बल्कि सभी जल स्त्रोतों, पहाडों आदि की है" इसका दुरुपयोग नहीं करों। इसका नाश नहीं करों। यह सभी समय में हमारा चिंता में रखने की आवश्यकता बहुत अधिक है। यह हमारा कर्तव्य है। प्रकृति को हमारा माँ का रूप में देखकर इसका रक्षा करो।